अलवर जिले नगरीय एवं ग्रामीण आधारभूत सुविधाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन

*डॉ. अशोक कुमार गुप्ता
*राकेश कुमार कपूरिया

शोध सारांश

समाज में मनुष्य जब क्रिया करता हैं तो उसके सामने अनेक विकल्प होते हैं उसके किसी एक विकल्प को स्वीकार करके क्रिया करने का आधार सामाजिक विकास ही होता हैं। इस दृष्टिकोण से मूल्य क्रिया का वह आधार हैं जो कि नैतिकता अथवा तर्क अथवा सौंदर्य–परक निर्णय के आधार पर लिया जाता हैं। मूल्यांकन की इस प्रक्रिया में भावना एवं समझ के आधार पर निहित हैं। भूगोलशास्त्री यह मानते हैं कि सामाजिक विकास संस्कृति व भौगोलिक परिवेश के द्वारा स्वीकृत होते हैं और वे संस्थात्मक प्रक्रिया के माध्यम से सामाजिक प्रक्रिया के अंग बन जाते हैं। अतः सामाजिक कारकों का चयन भौगोलिक एवं सांस्कृतिक आधार पर किया जाता हैं। फिर भी मनुष्य का व्यक्तित्व उसे एक ऐसी विशिष्टता प्रदान करता हैं कि वह अलग–अलग विकल्पों में से, जो कि संस्कृति के द्वारा स्वीकृत हैं, किसी एक विकल्प का चयन करता हैं। इस दृष्टिकोण से हालांकि व्यक्ति को विभिन्न विकल्पों में से किसी एक विकल्प को चयन करने की स्वतंत्रता है फिर भी विभिन्न विकल्प सांस्कृतिक व भू–दृश्यों के द्वारा निर्धारित होते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी द्वारा अलवर जिले के ग्रामीण एवं नगरीय आधारभूत सुविधाओं का विश्लेषण द्वितीयक समंकों के आधार पर किया गया है।

संकेतांक : समाज, क्रिया, मूल्यांकन, सामाजिक विकास, संस्कृति, भौगोलिक परिवेश, भू–दृश्य, ग्रामीण, नगरीय।

परिचय

अध्ययन क्षेत्र में सिंचाई से पूर्व न तो पेयजल की व्यवस्था थी और न ही स्थायी कृषि कार्य था जिसके कारण स्थायी आबाद गाँवों की संख्या कम थी। वर्षा काल में लोग अपने घरों में लौट आते थे तथा शुष्क काल में पंजाब–हरियाणा की और स्वयं तथा पशुओं को खिलाने के लिए प्रवास कर जाते थे।

सारणी संख्या– 1

अलवर जिले में आबाद व गैर आबाद गांव (वर्ष 2018)

(संख्या में)

तहसील	आबाद	गैर आबाद	कस्बों की संख्या
अलवर	199	7	1
रामगढ़	165		
बहरोड़	175	2	1
बानसूर	131	1	
राजगढ़	242	7	1
थानागाजी	148	11	

लक्ष्मणगढ़	193	2	1
कठूमर	137	2	1
किशनगढ़ बास	105	4	2
मण्ड़ावर	142		
तिजारा	202	3	2
कोटकासिम	115	1	

स्त्रोत–जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, अलवर, 2019।

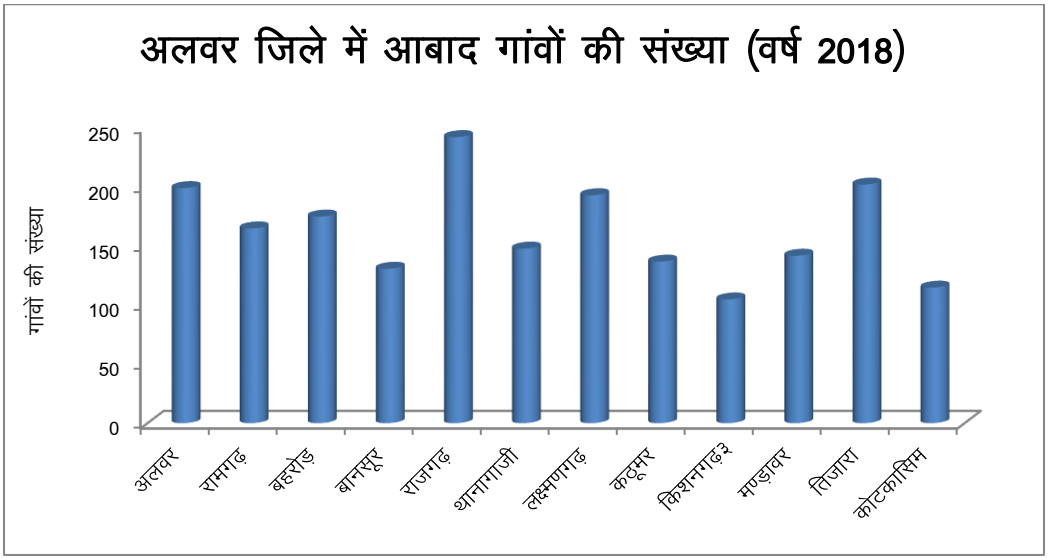

आरेख 1 : अलवर जिले में आबाद गांवों की संख्या

अस्थायी घरों जैसे कच्चे मकान तथा झोंपडे आदि का निर्माण किया जाता था, जिसका मुख्य कारण था कि न तो पक्के घरों के निर्माण की सामग्री उपलब्ध थी और न ही निर्माण के लिए आवश्यक पूंजी थी। इसलिए सम्पूर्ण क्षेत्र में सैकड़ों किलोमीटर की दूरी पर छितरी हुई कच्ची बस्तियां ही दिखाई देती थी। लेकिन वर्तमान में कृषि विकास से स्थायी कृषिगत आय में वृद्धि हुई है, जिससे स्थायी आबाद गाँवों का विकास होने लगा। गाँवों के विकास से स्थायी कृषि कार्य तथा कृषि से जुडे अन्य कार्यों के विस्तार से कृषि अर्थव्यवस्था का विकास हुआ फलस्वरूप सघन आबाद बस्तियों का विकास प्रारम्भ हुआ। प्रारम्भ की छितरी तथा कच्ची बस्तियों का स्थान वर्तमान में सघन पक्की बस्तियों ने ले लिया है।

सारणी 1 के अनुसार अध्ययन क्षेत्र में विकास के उपरांत जनसंख्या के स्थिरीकरण की प्रकृति बढ़ी है तथा आबाद गाँवों की संख्या में वृद्धि तथा गैर आबाद गाँवों की संख्या में कमी आयी है। अध्ययन क्षेत्र में वर्ष 2018 में आबाद गाँवों की संख्या 1954 थी।

शिक्षा

शिक्षा का मानवीय साधनों के विकास में प्रमुख स्थान होता है शिक्षा एक साधन के साथ–साथ स्वयं में एक साध्य भी होती है, क्योंकि विकास का लक्ष्य लोगों को शिक्षित करना भी होता है। शिक्षा के विकास से अनेक लाभ प्राप्त होते है जैसे जन्मदर में गिरावट लाने में आसानी, शिशु मृत्यु दर में कमी, मानवीय दक्षता में वृद्धि से उत्पादन में वृद्धि, जीवन स्तर में वृद्धि एवं सामाजिक परिवर्तन जिससे सामाजिक कुरीतियों जैसे बाल विवाह, लड़के की इच्छा आदि को दूर करने में मदद मिलती है।

सारणी संख्या 2 :
अलवर जिले में शिक्षण संस्थाऐं (वर्ष 2017–18)

क्र. सं.	शिक्षण संस्थाऐं	संख्या
1	सामान्य शिक्षा हेतु कॉलेज	85
2	उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक विद्यालय	1273
3	उच्च प्राथमिक विद्यालय	1887
4	प्राथमिक विद्यालय	1490
	कुल	**4735**

स्त्रोत : कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी, अलवर, वर्ष 2019।
कार्यालय निदेशक कॉलेज शिक्षा, जयपुर, वर्ष 2019।

शिक्षा के कई आयाम हैं जैसे प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा तथा उच्च शिक्षा। शिक्षा सामान्य प्रकार की एवं तकनीकी हो सकती है। अनेक शैक्षणिक कार्यक्रमों के तहत अलवर में शिक्षा के विस्तार पर सरकार ने ध्यान दिया है। यही वजह है कि अलवर शिक्षा के क्षेत्र में देश के औसत शैक्षणिक विकास वाले जिलों में समाहित किया गया है। यहाँ ग्रामीण एवं नगरीय दोनों ही क्षेत्रों में शिक्षा का फैलाव हुआ है। यहाँ प्राथमिक स्कूल, माध्यमिक स्कूल, उच्च माध्यमिक स्कूल आदि सभी प्रकार की शिक्षण संस्थाऐं यहाँ स्थित है। नगरीय क्षेत्रों में कॉलेजों का विकास अधिक हो रहा है परन्तु प्राइवेट कॉलेजों का विकास बड़े–बड़े ग्रामों तक हो रहा है।

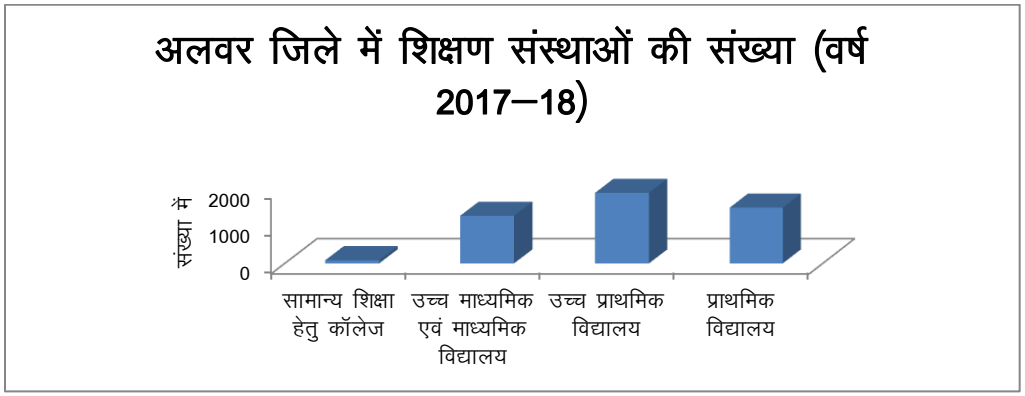

आरेख 2 : अलवर जिले में शिक्षण संस्थाऐं

वर्ष 2017–18 तक सम्पूर्ण क्षेत्र में 85 सामान्य शिक्षा हेतु कॉलेज, 1273 उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक स्कूल, 1887 उच्च प्राथमिक विद्यालय, 1490 प्राथमिक विद्यालय खोले जा चुके है। इस प्रकार पता इस बात से भी लगता है कि वर्ष 2017–18 में अलवर के अन्दर विभिन्न शिक्षा संस्थाओं में कुल 446822 छात्र एवं 367739 छात्राएं अध्ययनरत थी जिनकी संख्या में क्षेत्र में लगातार वृद्धि होती जा रही है।

चिकित्सा

स्वस्थ व्यक्ति विकास का साधन व साध्य दोनों होता है। स्वस्थ नागरिक ही देश का विकास तेजी से बढ़ा सकते है और विकास का माप होता है। व्यक्तियों के स्वास्थ्य में सुधार होना चाहिए जो खानपान, शुद्ध पेयजल, आवास की सुविधाओं, पर्यावरण आदि तत्वों पर निर्भर करता है। इनका समुचित विकास होने से लोग स्वस्थ रह सकते है।

सारणी संख्या 3 :

अलवर जिले में चिकित्सा संस्थाऐं (वर्ष 2017–18)

क्र. सं.	चिकित्सा संस्थाऐं	संख्या
1	चिकित्सालय	17
2	औषधालय	6
3	प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	68
4	मातृत्व एवं शिशु कल्याण केन्द्र	8
5	टी. बी. अस्पताल	1
6	उपकेन्द्र	527
	कुल	627

स्त्रोत : कार्यालय मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, अलवर, वर्ष 2019।

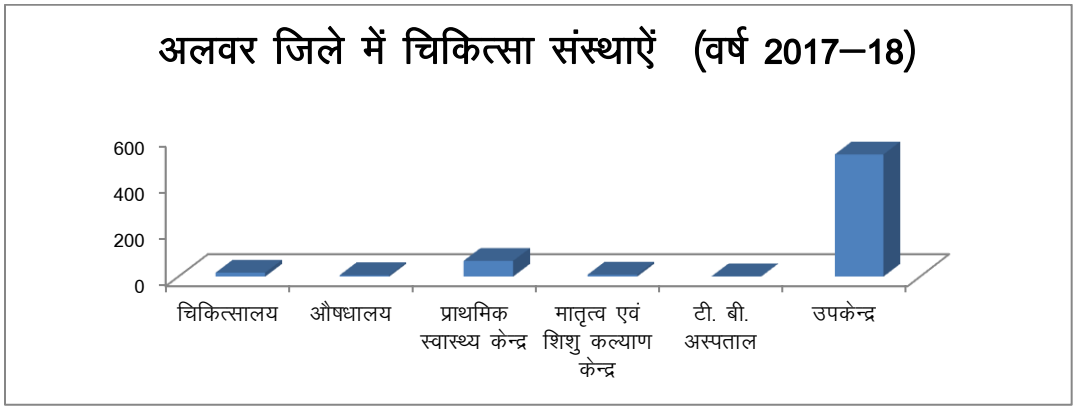

आरेख 3 : अलवर जिले में चिकित्सा संस्थाऐं

स्वास्थ्य सेवाओं में विभिन्न प्रकार की चिकित्सा सेवाएँ आती है,जो विशेषतया प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों व सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रो के द्वारा लोगों को उपलब्ध की जाती है। उत्तम स्वास्थ्य सेवाओं से शिशु मृत्यु दर व सामान्य मृत्यु दर घटती है, जन्म दर कम की जा सकती है एवं औसत आयु ऊँची होती है। अलवर क्षेत्र की स्वास्थ्य सेवाओं की महत्वपूर्ण प्राथमिकता माताओं की गर्भावस्था व उसके बाद पूर्ण देखभाल की होनी चाहिए। अलवर जिले में ग्रामीण महिलाओं व बच्चों के स्वास्थ्य में लगातार सुधार की अति आवश्यकता है।

जिला सांख्यिकी रूपरेखा वर्ष 2017–18 के आधार पर मत्स्यवाटी क्षेत्र में चिकित्सा सुविधाओं के अन्तर्गत 17 चिकित्सालय, 68 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र एवं प्रसूति गृह, 8 मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, 12 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, 1 टी.बी. क्लिनिक है। राजकीय चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवा वर्ग में स्वीकृत क्षमता के अन्दर विशेषज्ञ 45 है, सिविल असिस्टेंट सर्जन 142, प्रसाविका 508, मलेरिया एव स्वा. निरीक्षक 7 है। राजकीय आयुर्वेदिक, होम्पयोपैथिक एवं युनानी चिकित्सा संस्थाओं में सेवा वर्ग में वैद्य 156 है।

परिवार कल्याण केन्दों (वर्ष 2017–18 के अनुसार) के अन्तर्गत 8670 कापर टी केन्द्र, पुरूष नसबन्दी केन्द्र 51, महिला नसबन्दी 14637, कण्डोम केन्द्र 15782 एवं खाने की गोलियों के गर्भ निरोधक उपयोगकर्ता 13606 है।

सड़क परिवहन

19 वीं शताब्दी के दौरान अलवर जिले में सड़कों का विकास धीमी गति पर रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति तक परिवहन आयामों पर उतना ध्यान नहीं दिया जाता था, जितना एक विकासोन्मुख राज्य के लिये आवश्यक था। जिसके परिणामस्वरूप अन्य स्थानों पर हुई प्रगति की तुलना में इस जिले के अनेक गांव अछूते रह गये थे। स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् जब राजस्थान पंचायत अधिनियम, 1951 लागू हुआ तो ग्राम पंचायतों ने मौजूदा सड़कों को चौड़ा करने व गांवों को परस्पर जोड़ने के लिये नये रास्ते बनाने का कार्य आरम्भ किया गया। प्रथम पंचवर्षीय योजना लागू होने से पूर्व राजस्थान राज्य सड़कों के सम्बंध में पिछड़ा हुआ था तथा एक गांव से दूसरे गांव तक पथरीले मार्ग थे। अलवर जिले की सड़कें गर्मी के मौसम में धूल और वर्षा ऋतु में कीचड़ से भरे रास्ते मात्र थे। लिहाजा मौजूदा सड़कों के विकास एवं दूरी बढ़ाने पर आवश्यक ध्यान दिया गया।

वर्ष 2007–2008 में पेंट की हुई सडको की लम्बाई 2117 किलोमीटर थी जो वर्ष 2017–2018 में बढकर 3622.70 किलोमीटर हो गई। दूसरी ओर जिले में धात्विक एंव ग्रेवल सडको की लम्बाई घटती है जा रही हैं क्योंकि कच्ची सडकों को पक्की सडकों यथा डामर और सीमेंन्ट रोड में तीव्र गति से बदला जा रहा है जो कि ग्रामीण विकास का घोतक है।

सारणी संख्या 4 :
सड़कें एवं उनका वर्गीकरण (वर्ष 2007–08 से 2017–18)

वर्ष	राष्ट्रीय मार्ग	पेन्ट की हुई सड़कें	धात्विक सड़कें	ग्रेवल सड़कें
2007–08	151	2117	106	204
2012–13	172	3463.13	76.20	159.40
2017–18	192	3622.70	13.90	147.40

स्त्रोतः सार्वजनिक निर्माण विभाग, अलवर, वर्ष 2009 एवं 2019।

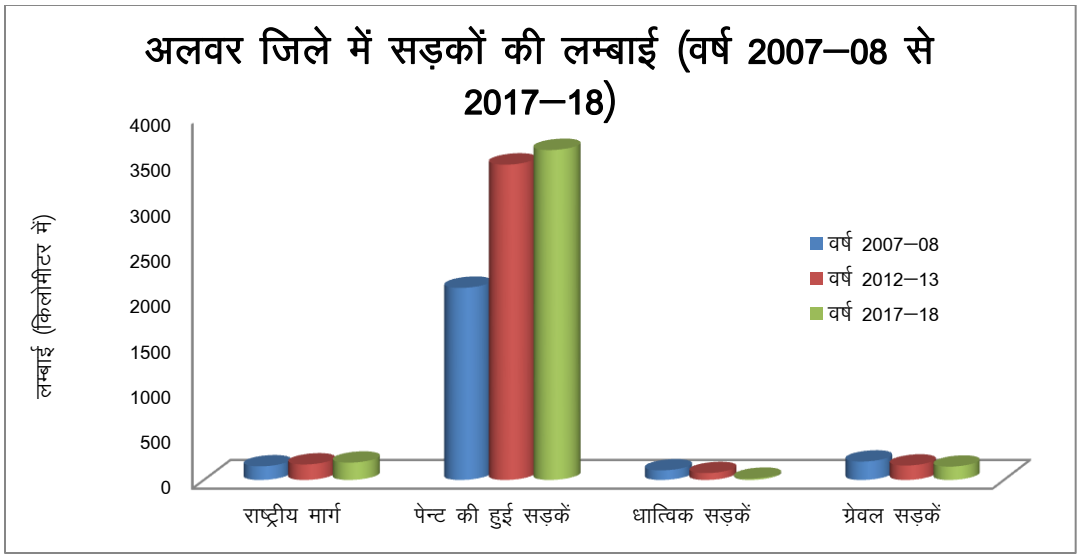

आरेख 4: अलवर जिले में सड़कों का वर्गीकरण

राष्ट्रीय मार्ग संख्या 48 दिल्ली से मुम्बई को जोड़ता है जिसके मध्य में जिले के शाहजहाँपुर और बहरोड़ कस्बे स्थित है।

राज्य राजमार्ग 13 चुरू के राजगढ़ से पिलानी, चिड़ावा, सिंघाना, खेतड़ी नीमकाथाना, शाहपुरा, थानागाजी, कुशालगढ़ को जोड़ता हुआ आगे अलवर से जुड़ता है। राज्य राजमार्ग 14 भरतपुर से नारनौल में मेव का बड़ौदा, बग्गड़ का तिराहा, अलवर, जिन्दौली, तातरपुर, सोड़ावास, बर्ड़ोद और बहरोड़ को जोड़ता है इसके अलावा यहाँ राज्य राजमार्ग 25 धारूहेड़ा से गंगापरसिटी जाता है। इसके साथ ही अलवर में अनेक महत्वपूर्ण पक्की सड़कें बनी हुई है जिनसे अनेक ग्राम एवं नगर जुड़े हुए है। सम्पूर्ण क्षेत्र में मुख्य नगर एवं कस्बे सड़कों से जुडे हुए है तथा जिले का राज्य के अन्य भागों तथा दिल्ली, हरियाण से सीधा सम्पर्क है।

रेल परिवहन

रेलमार्ग अलवर, मालाखेड़ा, राजगढ़, थाना आदि कस्बों को जोड़ता है जिसके मध्य में स्टेशनों के रूप से अलवर के अनेक ग्राम पड़ते है। अलवर व मालाखेड़ा यहाँ रेल्वे जंक्शन है। इस रेलमार्ग के द्वारा अलवर राज्य के अनेक भागों जैसे जयपुर, दौसा, भरतपुर, दिल्ली, हरियाणा आदि से जुड़ा है।

विद्युत सुविधा

किसी क्षेत्र का विकास वहाँ के ऊर्जा के विकास पर निर्भर करता है। कृषि उद्योग, परिवहन आदि क्षेत्रों में ऊर्जा की आवश्यकता होती है। वर्ष 2017–18 अलवर के सभी ग्राम एवं कस्बे विद्युतिकृत हो चुके है कोई भी ग्राम शेष नहीं है। जिले में गत वर्षों में चलाये गये विद्युत कार्यक्रम निम्न है:

जिले में विगत वर्षों में 132 के.वी. का एक तथा 33/11 के. वी. 20 जी. एस.एस. का निर्माण कराया गया । इस

अवधि में 5000 कृषि, 20997 घरेलु, 406 पेयजल के, 358 औद्योगिक, 1208 कुटीर ज्योति, 3154 अघरेलु तथा 429 अनुसूचित जाति कनेक्शन जारी किये गये और 10 हरीजन बस्तियों का विद्युतीकरण किया गया।

इस दौरान 4918 नये ट्रांसफॉर्मर लगाये गये तथा 12601 खराब ट्रांसफॉर्मर बदले गये और सिंगल फेस के 893 ट्रांसफार्मर लगाये गये। 33 के.वी. की 159 किमी. 11 के. वी. की 973 किमी तथा एल.टी. 1086 किमी विद्युत लाईन डाली गई। उपभोक्ताओं की समस्याओं के निराकरण के लिए जिला मुख्यालय पर कॉल सेन्टर कायम किया गया, जिसका टोल फ्री दूरभाष नम्बर डी.एल.एल. 912 है। समझौते समितियों के माध्यम से 1751 प्रकरणों का निस्तारण किया गया।

सारणी संख्या 5 :

अलवर जिले में विद्युत उपभोग (वर्ष 2018)

क्र. सं.	उद्योगों का प्रकार	विद्युत उपभोग (मि. कि. वाट में)	विद्युत उपभोग (प्रतिशत में)
1	घरेलू एवं आवासीय उपभोग	157.75	14.61
2	व्यावसायिक उपभोग	34.71	3.22
3	औद्योगिक उपभोग	79.44	7.36
4	सार्वजनिक लाईट उपभोग	2.85	0.26
5	सार्वजनिक जल प्रदाय उपभोग	42.18	3.91
6	सिंचाई उपभोग	748.08	69.30
7	अन्य	14.52	1.35
	कुल उपभोग	1079.56	100

स्त्रोतः अजमेर विद्युत वितरण निगम लि., अलवर, वर्ष 2019।

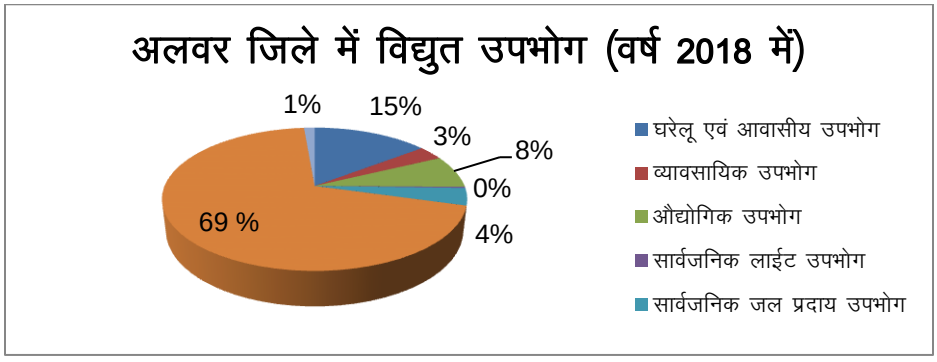

आरेख 5 : अलवर जिले में विद्युत उपभोग

अलवर जिले में वर्ष 2018 में कुल 1079.56 मि. कि. वाट विद्युत का उपभोग हुआ है। जिसमें सर्वाधिक 748.08 मि. कि. वाट विद्युत का उपभोग कृषि कार्यों यथा सिंचाई में हुआ है जो कुल विद्युत उपभोग का 69.30 प्रतिशत है। इसके बाद विद्युत का सर्वाधिक उपभोग घरेलू एवं आवासीय प्रयोजनार्थ किया जाता है जो कि कुल विद्युत उपभोग का 14.61 प्रतिशत है। सबसे कम सार्वजनिक लाईटों में विद्युत खर्च होती है, यह मात्र 0.26 प्रतिशत ही है।

सारणी 6:

अलवर जिले में विद्युत उपभोक्ता (वर्ष 2017–18)

क्र. सं.	उपभोक्ता का प्रकार	संख्या	संख्या (प्रतिशत में)
1	घरेलू एवं आवासीय उपभोक्ता	217020	71.19
2	व्यावसायिक उपभोक्ता	26394	8.66
3	औद्योगिक उपभोक्ता	3503	1.15
4	सार्वजनिक उपभोक्ता	156	0.05
5	सार्वजनिक जल प्रदाय उपभोक्ता	2556	0.84
6	सिंचाई उपभोक्ता	54434	17.86
7	अन्य	801	0.26
	कुल उपभोग	304864	100.00

स्त्रोतः जयपुर विद्युत वितरण निगम लि., जयपुर, वर्ष 2019।

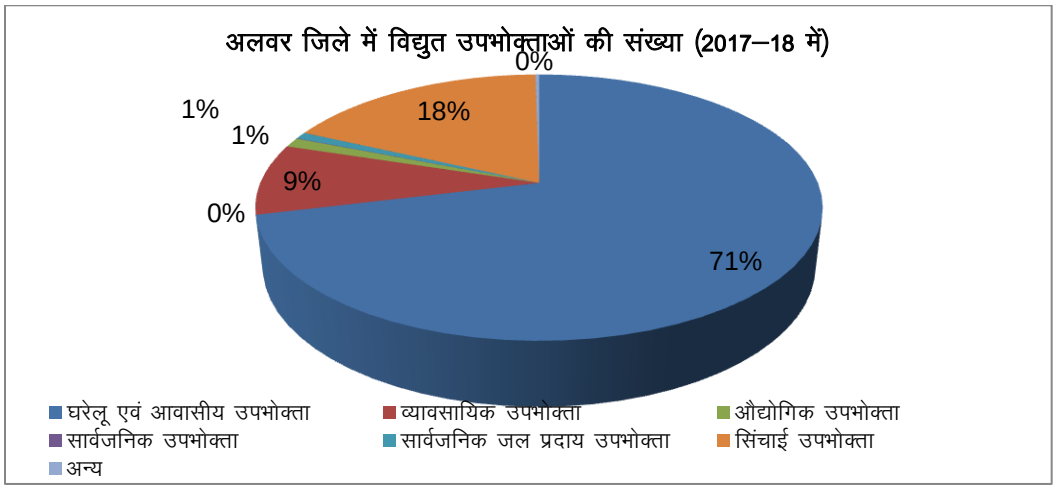

आरेख 6 : अलवर जिले में विद्युत उपभोक्ताओं की संख्या

अलवर जिले में कुल उपभोक्ताओं की संख्या 304864 है। इन उपभोक्ताओं में सर्वाधिक उपभोक्ता घरेलू एवं आवासीय है जो कुल उपभोक्ताओं का 71.19 प्रतिशत है। 17.86 प्रतिशत कृषि उपभोक्ता है तथा 8.66 प्रतिशत व्यावसायिक, 1.55 प्रतिशत औद्योगिक, 0.84 प्रतिशत सार्वजनिक जल प्रदाय उपभाक्ता, 0.05 प्रतिशत सार्वजनिक उपभोक्ता एवं 0.26 प्रतिशत अन्य उपभोक्ता है।

बैकिंग एवं संचार :

बैकिंग सेवाओं का भी आधारभूत विकास पर प्रभाव पड़ता है। अच्छी बैकिंग सुविधाओं से किसानों व अन्य व्यापारियों को ऋण लेने में सुविधा रहती है। जिले में स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, ओरियन्टल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर, बड़ौदा बैंक तथा अन्य बैंक एवं जीवन बीमा क्षेत्र में भारतीय जीवन बीमा निगम, सहारा, बजाज, टाटा ए.आई.जी. आदि विद्यमान है।

सारणी संख्या 7:
अलवर जिले में संचार सुविधाऐं (वर्ष 2017–18)

क्र. सं.	संचार सुविधा	संख्या	संख्या (प्रतिशत में)
1	डाकघर	468	9.02
2	टेलीफोन केन्द्र	110	2.12
3	सार्वजनिक सन्देश कार्यालय	1	0.02
4	स्थानीय कार्यालय	1	0.02
5	मोबाइल	3449	66.45
6	लेटर बॉक्स	1161	22.37
	कुल	5190	100.00

स्त्रोत : कार्यालय अधीक्षक, डाकतार विभाग, अलवर, वर्ष 2019।

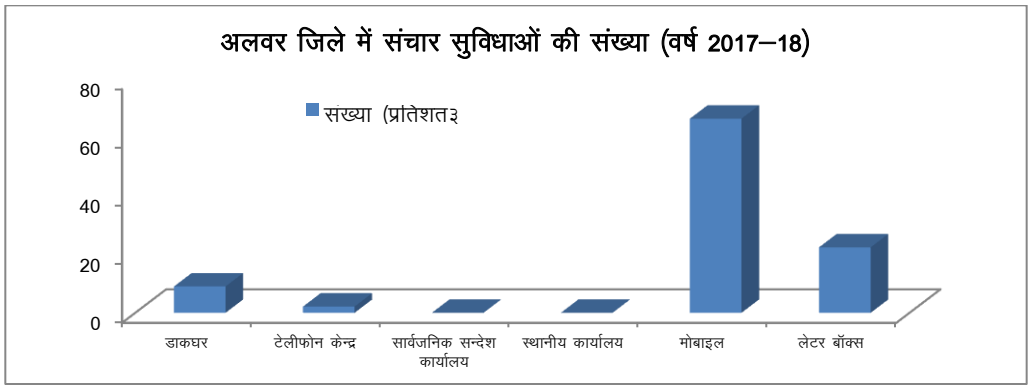

आरेख 7: अलवर जिले में संचार सुविधाओं की संख्या

व्यावसायिक उन्नति एवं औद्योगिक विकास के लिए परिवहन के साथ–साथ संचार सुविधाएँ अत्यधिक आवश्यक है। विभिन्न क्षेत्रों के मध्य मनुष्यों का आवागमन एवं माल का परिवहन दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। परिवहन के साधनों द्वारा भौतिक पदार्थो एवं व्यक्तियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जाता है।

अलवर जिले में वर्ष 2017–18 में संचार सुविधा के साधनों की संख्या 5190 थी। जिनमें सर्वाधिक संख्या मोबाइलों की थी जो कुल सुविधा साधनों की 66.45 प्रतिशत था। दूसरे स्थान पर 22.37 प्रतिशत लेटर बॉक्स थे, 9.02 प्रतिशत डाकघर, 2.12 प्रतिशत टेलीफोन केन्द्र, 0.02 प्रतिशत सार्वजनिक सन्देश कार्यालय और 0.02 प्रतिशत ही स्थानीय कार्यालय थे।

पेयजल

जल के बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता है आज जिले की अलवर तथा रामगढ़ तहसील फ्लोराइड युक्त जल से ग्रसित है। जो कि एक भयंकर समस्या है। जिसके निजात के लिए विभिन्न कार्यक्रम चलाये जा रहे। जिले में पेजयल हेतु किये गये विभिन्न विकास कार्यक्रम निम्न है :–

जिले के ग्रामीण क्षेत्र में 64 क्षेत्रीय, 94 पाइप्ड, 586 टी.एस.एस. तथा 288 हैण्ड पम्प योजनाओं के माध्यम से पेयजल व्यवस्था का संचालन किया जा रहा है। जिले के शहरी क्षेत्र में इस समय 372 नलकूपों और 324 हैण्डपम्पों के माध्यम से पेयजल की आपूर्ति हो रही है।

जिले में विगत तीन वर्षों के दौरान 321 नये नलकूप तथा 2446 नये हैण्डपम्प स्थापित किये गये। 37 फ्लोराइड प्रभावित गांवों से शुद्ध पेयजल सुलभ कराया गया। 1372 गांवों, ढाणियों व बस्तियों में पेयजल उपलब्ध कराया गया। पेयजल कार्यो पर 51.77 करोड़ रूपये खर्च किये गये। 376 किलोमीटर पेयजल की पाईप लाईन बिछाई गई। स्वजलधारा की 16 परियोजनाएं मंजूर की गई जिन पर अब तक एक करोड़ रूपया खर्च किया जा चुका है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ

मत्स्यवाटी एवं होली पर आयोजित होने वाले चंग और गींदड़ नृत्यों ने इस जनपद की लोक संस्कृति को पंख प्रदान किये है। इन लोक नृत्यों की स्वर लहरियों में जहाँ आंचलिक जन–जीवन का अमृत माधुर्य घुला हुआ है, वही भोपा–भोपी गायन, बाँसुरी व अलगोजों के स्वर तथा सामाजिक उत्सवों पर महिलाओं द्वारा गाये जाने वाले गीतों में यहाँ की समृद्ध लोक परम्पराओं का प्रतिबिम्ब झलकता है।

सारणी सं. 8 :
अलवर जिले में मेले (वर्ष 2018)

मेले का नाम	स्थान	तिथि
भर्तृहरि	भर्तृहरि	भादवा शुक्ला अष्टमी
जगन्नाथजी	रूपबास	आषाढ़ शुक्ला नवमी से एकादशी
पाण्डुपोल हनुमानजी	पाण्डुपोल	भादवा शुक्ला चतुर्थी, पंचमी
शीतला माता	दहमी	अश्विन कृष्णा सप्तमी व चैत्र कृष्णा सप्तमी
गणगौर	कठूमर	चैत्र कृष्णा तृतीया व चतुर्थी
गरीबनाथ	समदा	चैत्र कृष्णा पंचमी

स्त्रोतः कार्यालय जिला जनसम्पर्क अधिकारी, अलवर, वर्ष 2019।

अलवर जिले का देश प्रसिद्ध मेला भर्तृहरि बाबा का मेला है जो थानागाजी तहसील के भर्तृहरि नामक स्थान पर प्रतिवर्ष भादवा शुक्ला अष्टमी को लगता है। यहाँ पर बाबा भृर्तहरि की पूजा की जाती है। इस मेले में राज्य व देशभर से लगभग 200000 व्यक्ति आते हैं। रूपबास में जगन्नाथजी माता का मेला, पाण्डुपोल में पाण्डुपोल हनुमानजी मेला, दहमी का शीतला माता मेला तथा गरीबनाथ का मेला आदि जिले में धार्मिक आस्था के प्रतीक हैं।

निष्कर्ष

सामाजिक विकास से तात्पर्य आधारभूत सुविधाओं के विकास से है जो एक राज्य द्वारा निवास करने वाली जनसंख्या को उपलब्ध करवायी जाती है। सामाजिक विकास में शिक्षा, चिकित्सा, स्वास्थ्य सुविधाऐं, परिवहन, विद्युत, बैंकिंग, संचार एवं पेयजल आदि सुविधाऐं आती हैं।

अलवर जिला शिक्षा के क्षेत्र में लगातार उन्नति कर रहा है। पुरूषों के साथ–साथ महिला शिक्षा में भी अलवर जिला अव्वल जिलों में आता है। साक्षरता जनसंख्या का गुणात्मक पहलू है। अतः अलवर जिला इस गुणात्मक पहलू के द्वारा सामाजिक विकास में उतरोत्तर वृद्धि कर रहा है।

शिक्षा में सुधार के कारण चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं में उन्नति होती जा रही है अर्थात् जिले की जन्म दर में कमी, मृत्यु दर में गिरावट व पोषण स्तर में सुधार के कारण जीवन प्रत्याशा में वृद्धि हो रही है। जनसंख्या वृद्धि में कमी के कारण परिवार कल्याण के केन्द्र में वृद्धि, पुरूष नसबन्दी में जागरूकता से हो रही है।

उपर्युक्त से स्पष्ट हो रहा है कि मत्स्य क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार एवं सामाजिक आर्थिक विकास के कारण जन्म एवं मृत्यु दर में लगातार कमी अलवर जिले में परिवहन के साधन के रूप में सड़क एवं रेल परिवहन का विकास हुआ है। यहाँ विभिन्न प्रकार की सड़के जैसे पक्की सड़क कच्ची सड़क एवं फुटपाथ पायी जाती है क्षेत्र में राष्ट्रीय मार्ग के साथ–साथ राजमार्ग एवं अन्य महत्वपूर्ण सड़कों का विगत वर्षो में विकास हुआ है। यहाँ वायु मार्ग की सुविधा नहीं पायी जाती। परिवहन के विकास का पता इसी बात से चलता है कि यहाँ 2017–18 में कुल 76976 विभिन्न प्रकार के परिवहन वाहनों का पंजीकरण हुआ है।

परिवहन सुविधाओं की दृष्टि से पहले अलवर जिला पिछड़े जिलो में आता था, लेकिन अब सड़क एवं रेल परिवहन में विकास हो रहा है। अलवर जिले से एन. एच. 8 एवं कुछ राज्य राजमार्ग भी गुजरते हैं। जिले के अधिकांश मुख्य नगरों को सड़कों से जोड़ दिया गया है। रेल परिवहन के मार्ग भी अध्ययन क्षेत्र से गुजरते हैं जिनका विद्युतीकरण केन्द्र सरकार के प्रयासों से किया जा रहा है। अलवर जिला वायु परिवहन परिवहन की दृष्टि से पिछड़ा हुआ है।

विद्युत सुविधाओं में अलवर जिला वर्ष 2010–11 में पूर्ण विद्युतीकृत हो चुका था। सिंचाई, घरेलू आवश्यकता और उद्योगों के लिये पर्याप्त विद्युत अध्ययन क्षेत्र में उपलब्ध है। बैंकिंग एवं संचार सेवाओं में सरकार द्वारा जारी योजनाओं से अधिकांश व्यक्ति लाभ प्राप्त कर रहे हैं। अध्ययन क्षेत्र का पूर्वी भाग फ्लोराइड की समस्या से ग्रसित है जिसे दूर करने हेतु सरकारी स्तर पर प्रयास किये जा रहे हैं।

अतः स्पष्ट है कि आधारभूत सुविधाओं के तहत भी अध्ययन क्षेत्र में अनेकोनेक सामाजिक विकास कार्य किये गये हैं। जैसे प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, बावड़ियों का पुनः निर्माण, तालाब व जोहड़ों की खुदाई इन कार्यों में विशेष रूप

से शामिल की गई हैं।

*एसोसिएट प्रोफेसर
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय, अलवर
**शोद्यार्थी
भूगोल विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

सन्दर्भ सूची

1. नाथूरामका, लक्ष्मीनारायण (2013) :राजस्थान की अर्थव्यवस्था, सी. बी. एच. पब्लिकेशन।
2. डॉ. गुर्जर, रामकुमार (1992) : इन्दिरा गॉधी नहर क्षेत्र का भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृ. 118
3. जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, अलवर, 2019।
4. कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी, अलवर, 2019।
5. कार्यालय निदेशक कॉलेज शिक्षा, जयपुर, 2019।
6. कार्यालय मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, अलवर, 2019।
7. सार्वजनिक निर्माण विभाग, अलवर, 2009 एवं 2019।
8. अजमेर विद्युत वितरण निगम लि., अलवर, 2019।
9. जयपुर विद्युत वितरण निगम लि., जयपुर, 2019।
10. कार्यालय अधीक्षक, डाकतार विभाग, अलवर, 2019।
11. कार्यालय जिला जनसम्पर्क अधिकारी, अलवर, 2019।